© AJH 2023 | Vol. 05, Issue 02, April – June, 2023

ANSH – Journal of History

ISSN (Online) No. 2582 -046X

Peer-Reviewed, Refereed & Open-Access International Journal of History

चारण कवियों का राजस्थान साहित्य में अभिन्न योगदान

(The Integral Contribution of Charan Poet to Rajasthani Literature)

पूजा चारण

शोधार्थी (JRF), IIS (Deemed to be University), Jaipur

ABSTRACT:

कवियों की लेखनी ने इतिहास को सहेज कर रखा है। इन लेखनी कला में दक्ष माने जाते हैं। चारण कवि जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर अभी तक इतिहास को अपनी कलम से सुरक्षित रखने के साथ-साथ अन्य पक्षों को भी उजागर किया है। जहां प्राचीन समय से ही उनके काव्य लेखन ने भक्ति को चुना। वही मध्यकाल एवं आधुनिक समय में इन्होंने भक्ति के अलावा राजनीति, दरबारी साहित्य, प्रकृति प्रेम पर भी बहोत सारा लेखन कार्य किया है। आधुनिक समय में भी अपना योगदान दिया है इस कारण से किया गया है। आधुनिक समय में भी राजस्थान में चारण कवियों ने राजस्थानी साहित्य में अपना योगदान दिया है। इस कारण राजस्थानी साहित्य लेखन की एक शैली का नाम 'चारण साहित्य लेखन' शैली कहा जाता है । मेरे संशोधन में उक्त वर्णित चारण साहित्य की काव्य विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

KEYWORD:

चारण जाति, प्राचीन चारण साहित्य, मध्यकालीन चारण साहित्य, उत्पति विषयक वृतांत, यशस्वी गाथाएं, भक्तिकाव्य, विदेशी आक्रमण, परंपरागत वीर काव्य, देवियाण, निन्दात्मक काव्य

राजपूतानें का नाम इसकी विशिष्ट संस्कृति के लिए भारत के सांस्कृतिक इतिहास के स्वर्णपटल पर स्वर्णिम अक्षरों से अंकित है। राजपूताने का इतिहास सदैव ही गौरवान्वित करने वाला रहा है। अपने

वर्तमान स्वरूप में आने से पहले राजपूताना अनेक छोटे-बड़े राजपूत राज्यों में बँटा था, जिसे भारत की आजादी के बाद वर्तमान स्वरूप में अनेक प्रयासों के बाद लाया गया था। इसी राजपूताना के गौरवमय इतिहास को बनाने वाले राजपूत राजाओं के साथ चारण जाति का नाम हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा जिन्होनें राजाओं की वीरता, प्रशंसा निंदा में काव्य रचना की. पिछली शताब्दियों में इन कवियों ने एक हजार वर्ष के लम्बे समय में डिंगल साहित्य रचना की और राजस्थान के स्वर्णिम इतिहास को चारणों की ओजस्विनी वाणी ने बहुमूल्य एवं बेजोड़ गौरव प्रदान किया है।

चारण जाति के परिचय पूर्ण चारण इतिहासकार, कवि एवं मनीषी श्री कृष्ण सिंह बारहठ (शाहपुरा) की पुस्तक ‘‘चारण-कुल प्रकाश‘‘ से एक छंद दृष्टव्य हो, जो कि उनके पितामह क्रान्तिकारी ठाकुर केसरी सिंह जी बारहठ द्वारा रचित है।

‘‘चारण वही है, जो स्वतंत्रता उपासक हो,
वाणी का वरद-पुत्र, जाने सत्य-तत्व को।
अभय अडोल, अवलम्ब निज शक्ति पर,
क्षात्रिन को पाठ देत, व्यापक ममत्व को।
साहस की ज्वाला फूँकि, मुर्दे जगाय देत,
नाशवान् देह दै, खरीदे अमरत्व को।
वीर इस निर्झर, बहाय बिथराय स्वयं,
न्हाय के दिखाय देत, मरन महत्व को।[1]

चारण जाति द्वारा रचित साहित्य का वर्णन करने से पूर्ण चारण जाति के इतिहास पर प्रकाश डालना भी बहुत ही आवश्यक है। इस जाति का इतिहास जानना भी बहुत रोचक विषय है, क्योंकि इस जाति ने राजपूताना के साहित्य की अपार सेवा की है। जहाँ तक इस जाति का सम्बन्ध है, इसके उत्पत्ति के सन्दर्भ में पौराणिक प्रसंग बहुत उपलब्ध होते हैं। जिन पर बुद्धिवादी अधिक विश्वास नहीं करते।

चारण जाति की उत्पत्ति कब और कैसे हुई इसका, अधिक ज्ञान नहीं प्राप्त होता परन्तु इस समाज से जुड़े कुछ विद्वान व्यक्तियों तथा इनके साहित्य को एक शोध के रूप में स्वीकार कर चुके विद्वानों का मानना है कि इस जाति का इति बहुत अधिक प्राचीन नहीं है। परन्तु ‘‘चारण कुल प्रकाश‘‘ जैसे साहित्य के रचियता कृष्ण सिंह बारहट का मानना है कि इनकी उत्पत्ति सृष्टि के सर्जन काल से है और इनकी उत्पत्ति देवताओं से हुई है, जिसका प्रमाण श्री मद्भागवत में दिया जाता है, कि नारद मुनि को ब्रह्मा सृष्टि क्रम बताते हैं, वहाँ के द्वितीय स्कन्ध के छटे अध्याय में बारह से तेरह तक के दो श्लोकों में इसका वर्णन है।

अहं भवान् भवश्चैव त मुनयोऽग्रजाः।।
सुरसुरनरा नागाः खगा मृगसरीसृपाः।।12।।
गंधर्वाप्सरसों यक्षा रक्षोभूतगणोरगाः।।
पशवः पितर सिद्धा विधाधरश्च चारण दुमाः।।3।।

अर्थः हे नारद मैं, तू, शिवाये अग्रज-मुनि, देवता, असुर, मनुष्य, नाग, खग, मृगं, सृपा।।1।। गंधर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, भूत-गण उरग, पशु, पितर, सिद्ध, विधाधर, चारण, वृक्ष (ये सब हरि से हुए हैं)।।[2]

इनके साथ ही अनेक चारण लेखकों जिनमें श्री भैरवदान रचित चारणोत्पति मीमासा-मार्तण्ड में मुरारिदान, कृत संक्षिप्त ''चारण ख्याति में नंदसिंह द्वारा रचित चारण-जाति का संक्षिप्त इतिहास में एवं सूर्यमल्ल, भगवती प्रसाद, जादूदान, श्यामलदास चारण विद्वानों आदि ने भी इस जाति की उत्पति को सृष्टि के आरम्भ काल से ही माना है। परन्तु इनके इस मत का खण्डन करते हुए चारण साहित्य का इतिहास में लेखक जिज्ञासु ने कहा है कि सौभाग्य से कहिए या दुर्भाभ्य से हमारे देश में महापुरूषों के साथ अपनी परम्परा एवं वंश को जोड़ने की प्राचीन परम्परा है।, जैसा कि सूर्यमल्ल मिश्रण ने चारण जाति का आदि पुरूष लोमहर्षण (पुराणों के रचयिता) के वंशज सूत को माना है। जो एक गौरव की बात समझी गई है। जो भी हो चारण जाति का अस्तित्व सहस्त्रों वर्ष प्राचीन है आदिकाल में चारण घोड़, गाय, बैल, भैंस के क्रय-विक्रय करते थे, धनाढ्य चारण आढ़तियों तथा गुमाशतों का काम करते थे। वस्तुतः चारण जाति का इति राजपूतकालिन भारत (700-1200।ण्क्ण्) से प्रारम्भ होता है।[3] राजपूतों की यशस्वी गाथाओं को अमर करने वाले चारण जाति का राजस्थान के साहित्य में अमर नाम रहेगा। राजस्थान के साहित्य के विभिन्न विभाजन में चारणी साहित्य का नाम जैन साहित्य, लोक-साहित्य, धार्मिक साहित्य के साथ बहुत आदर से लिया जाता रहेगा। चारण-जाति का जीवन अपने मुख्य उद्देश्य जो कि साहित्य की सेवा था और आज भी यह अपने लक्ष्य पर द्दढ़ है।

चारण साहित्य के इतिहास का वर्णन करते समय इस जाति के साहित्य को प्राचीन काल (1150-1500) मध्यकाल (1500-1850), आधुनिक काल (1850- वर्तमान तक) में विभाजित किया जा सकता है।

चारण साहित्य के प्राचीनकाल (1150-1500) में देश की व राजस्थान की राजनैतिक स्थिति बहुत ही उपलटफेर से गुजर रही थी महमूद गजनवी के आक्रमण ने देश में मुसलमानों के लिए भारत के द्वार खोल दिये। इस समय जब भारतीय इतिहास के प्रायः 1000 वर्ष उस अंधेर काल में जब भारतवासियों को विदेशी आक्रमणकारियों ने दासत्व के बन्धन में ही नहीं जकड़ा था, अपितु यहां की सभ्यता एवं धर्म की भी धज्जियाँ उड़ा दी थी उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, सिन्ध आदि में बसे चारणों ने यत्र-तत्र बची हुई क्षत्रिय भावना की उदीप्त कर भारतीय स्वतंत्रता एवं सांस्कृतिक स्वाभिमान को अपनी अमृत संजीवनी वाणी द्वारा सुरक्षित रखा था।[4]

चारण वारण चहल धन, नित बाजता नीसाण
जिण दरबार न दीससै, सो दारबार अजाण।

श्री रावत सारस्वत के संग्रह में सावलों से प्राप्त पाण्डुलिपी में वर्णन इस दोहे से चारण जाति की महता को उजागर किया जा सकता है। प्राचीन काल में राजस्थान के चारण साहित्य का श्री गणेश बरसड़ा शाखा के मावल से माना जाता है। इनके बाद अनेक कवि जिनमें हंूपकरण, हरसूर, आल्हा, भीमा, चानण, पसाइत, बारू आदि द्वारा रचित प्रशंसात्मक काव्य, महत्वपूर्ण राजस्थानी साहित्य है। राजपूत राजाओं महारावल दुर्जनसाल (जैसलमेर) महाराणा कुम्भा (मेवाड़) वीरमदेव (मारवाड़) राव जोधा (मारवाड़) (राव जोधा की प्रशंसा) हमीर (मेवाड़) की वीरता की प्रशंसा में जो दोहे लिखे है उन दोहों में राजपूत राजाओं की वीरता को अमर बना दिया साथ ही राजस्थान के साहित्य को उस वक्त सहारा दिया जब साहित्य की सेवा करना दूर की बात थी। इसके साथ चारण कवियों द्वारा रचित निन्दात्मक काव्य जिनमें प्रमुख रूप से लूणकरण, आल्हा द्वारा रचित स्फुट छंद प्रमुख हैं। प्राचीनकाल के चारण साहित्य में भक्ति काव्य की भी रचना के कुछ छुट-पुट उदाहरण मिलते हैं। जिनमें मावल, पीठवा के स्फुट छंदों को शामिल किया जा सकता है। इन चारण कवियों की भक्ति रचनाओं में नीति एवं उपदेश के तत्व विद्यमान रहे हैं। प्राचीन काल के चारण साहित्य में जो प्रमुख था वह था इनके द्वारा रचित वीरकाव्य।[5] इनके द्वारा रचित वीरकाव्य ही उनकी अश्रय कीर्ति का स्मारक है। युद्ध इसका अथ है विजय इसकी इति इस अथ से इति तक एक योद्धा को न जाने कितनी दुर्दमनीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ता। इनसे प्रभावित होकर कवियों ने जिस वीर काव्य का सृजन किया है, वह बड़ा ही ओजस्वी है। चारण लेखकों जिनमें आल्हा कृत वीरमायण, शिवदास कृत अचलदास खिची री वचनिका, गाडण पसाइतकृत राव रिणमल रा छंद आदि महानतम वीरकाव्य है जिनका स्थान राजस्थान के साहित्य में अभिन्न अंग के रूप में रहेगा। प्राचीन काल के चारण साहित्य ने वर्षों तक राजपूत क्षत्रीयों के संघर्षों की बहुत ही बखूबी से उकेरा उनकी वीरता, प्रशंसा को अमरत्व प्रदान किया। जो आज के राजस्थान के साहित्य का एक अभिन्न अंग के रूप में पढ़ा जाता है।

मध्यकाल (1500-1850) यह समय मुगलों तथा अंग्रेजी सत्ता के आगमन का काल था 1526 से 1761 तक मुगल-मराठों का वर्चस्व तथा इसके बाद अंग्रेजी सत्ता की हुकुमत का दबदबा बना रहा देश पर। इस समय में चारण साहित्य का योगदान सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। मध्यकाल में राजपूताना में मुगलों एवं अंग्रेजी हुकुमत के आरम्भिक स्थापना काल के विरूद्ध क्षत्रियों के मन में जीत की भावना पैदा करने वाली मात्र चारण जाति ही थी। इस काल में चारण साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। विभिन्न राजाओं-महाराजाओं के राज्याश्रित कवियों ने एक ओर जहाँ परम्परागत वीर काव्य के द्वारा क्षत्रियत्व का स्तुति गान किया, वहीं दूसरी ओर नवीन परिस्थितियों के अनुरूप वीर योद्धाओं को राष्ट्रीय रचनाओं के द्वारा स्वतंत्रता वेदी पर हँस-हँस कर प्राणों की बाजी लगा देने के लिए प्रेरित किया।[6] इस काल में भी राजस्थान

के साहित्य को भरपूर सेवा की। चारणों द्वारा कृत निन्दात्मक काव्य जिनमें दुरसा, महकरण नरहरिदास, हरिदास, जागों, दूदा आदि कवियों ने कतिपाय नरेशों को क्षात्र-धर्मे से विमुख होते देखकर उपालम्भ दिय हैं। मध्य काल के प्रमुख चारण कवि एवं उनके द्वारा रचित रचनाएं राजस्थान के साहित्य का अभिन्न अंगे हैं। जिनमें प्रमुख रूप से सूजा (बिठू) कृत छंद राव जैतसी रो, ईसरदास कृत हाला झालारी कुण्डलिया, हरिरस, बाल लीला, देवियाण[7], दुरसा कृत विरूद्ध छतहरी किरतारबावनी, राउश्री सुलतान रा कवित, झुलना राव मेधा रा, झूलणा राव मानसिंह रा, झूलणा राव श्री अमरसिंह जी गजसिंहधोतरा, केशवदास कृत गुणरूपक, गज गुण चरित, राव अमरसिंह रा दूहा, विवेकवार्ता, सत्ताईस निशाणी, गोरखनाथ जी के छंद, लाक्खा कृत पाबूरासा, माला साहू कृत झूलणा अकबर पातशाहजी रा एवं झूलणा महाराजा रायसिंहजी रा, कल्याणदास कृत राव रतनरी वेली, सायां कृत रूकमणी हरण, नाग दमण, आदि ग्रंथ राजस्थान के साहित्य के मध्यकालीन साहित्यिक भाग को उजागर करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। निन्दात्मक हो या प्रशंसात्मक काव्य हो चारण साहित्य ने दोनों की क्षेत्र में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया दुरसा आढ़ा ने जो महाराणा प्रताप की प्रशंसा में दोहा लिखा है वह चारण की कलम के हुनर को अपनी ऊँचाई पर पहुँचाता है।

‘अकबर घोर अंधार, ऊंघाणा हीदू अवर
जागै जगदातार, पोहरै राण प्रतापसी।।

अर्थात घोर अंधकार से परिपूर्ण अकबर के शासन से सब राजा ऊंघने लग गए किन्तु जगत का दाता प्रताप पहरे पर जगता रहा।[8]

प्रशंसात्मक काव्य के साथ-साथ चारण कवियों द्वारा रचित वीरकाव्य का भी मध्यकालीन राजनैतिक स्थिति में उठी अस्थिरता की चिंगारी में राजपूताना के राजाओं के हृदय में वीरता की भावना का संचार किया इनमें प्रमुख रूप से करमसी कृत सूजा बालेछा, मेह कृत कर्मसी एवं सावलदास चहुवान, सूजा कृत राव जैतसीरो छंद, दुरसा कृत विरूद्ध छतहरी, दूदाकृत कुंडलिया राठौड़ रायमल कल्ला री, महकरण कृत शार्दुल परमार, केशवदास कृत अमरसिंह राठौड़ इन कृतियों के साथ-साथ जग्गा खिड़ीया कृत वचनिका राठौड़ रतनसिंह री महेसदासोतरी, आदि प्रमुख हैं। वीरभाण, जो महाराजा अभयसिंह के साथ अहमदाबाद युद्ध में उपस्थित थे उन्होनें अपने कलम से युद्ध का वर्णन करते हुए अभयसिंह की वीरता का बखान राजरूपक में किया है, इनके साथ ही करणीदान का नाम भी चारण साहित्य के उत्तर मध्य काल में एक महान रचनाकार के रूप में स्मरणीय रहेगा। इनके द्वारा लिखीत अनेक ग्रन्थ उपलब्ध होता है। जिनमें विरदासिंणगार, यतीरासा, अभयभूषण एवं सूरजप्रकाश आदि प्रमुख हैं. उत्तर-मुध्य काल में ही कवि कानों कृत कवत चांपावता सींघला रा विणलोयावाला में कवि ने चांपा आसला के शौर्य-पराक्रम का अच्छा वर्णन किया है। मध्यकाल के चारण साहित्य में अब भक्तिकाल्य की परम्परा भी पूरी तरह से विकसित हो चुकी थी। इस परम्परा में ईसरदास कृत हरि-रस, माधोदास कृत रामरासो, गजमोष, महात्मा

सांया कृत नागदमन, रूक्मणीहरण, पीरदान कृत गुणनारायण ब्रह्मादास कृत भगतमाल, एवं कल्याणदास गाडण कृत नागदमन आदि प्रमुख भक्ति काव्य हैं। इस भक्ति काव्य के साथ-साथ मध्यकाल में ऐतिहासिक काव्य जो वीरता एवं प्रशंसात्मक तरीके से रचित है। इन काव्यों ने ऐतिहासिक रूप से साहित्य के महत्व को बढ़ाया है। मध्यकाल में इतिहास के साथ सम्बन्ध रखने वाली सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। जिनमें जग्गा कृत वचनिका राठौड़ रतनसिंह व महासदासो री गिरधर कृत सगतसिंह रासो, कुंभकरण कृत रतनरासो, बरवता खिड़ीया कृत कवित काव्य उल्लेखनीय है।[9] मध्यकाल में चारण कवियों द्वारा लिखित प्रशंसात्मक काव्य, निन्दात्मक काव्य, वीर काव्य, भक्ति काव्य, मरासिया, ऐतिहासिक काव्य आदि अनेक विधाओं द्वारा चारण समाज के महान लेखकों ने मध्यकाल में राजस्थान के साहित्य के सृजन में भरपूर योगदान दिया है। यह परम्परा आगे आधुनिक काल में भी विकसित होती रही।

आधुनिक काल की शुरूआत भारत के इतिहास में अंग्रेजी हुकूमत के दृढ़ता की परिचायक है। जैसे ही अंग्रेजी हुकुमत ने पूरे भारत को अपने कब्जे में कर लिया तब चारणी कलम के वीरता, प्रशंसा, निंदात्मक काव्य की जरूरत भी कम हो गई क्योंकि राजाओं ने धीरे-धीरे उनकी अधिनस्ता स्वीकार कर ली ओर रणभूमि में युद्ध की ललकारों शनैः-शनैः समाप्त हो गई। चारण जाति के साहित्य लेखन में भी अंग्रेजी सत्ता के सम्पर्क में आने से परिवर्तन हुआ 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उनके साहित्य एवं बौद्धिक विचारों में परिवर्तन हुआ। दरबारी कवि जैसे बाकीदास एवं सूर्यमल ने राजाओं की निंदा ब्रिटिश सत्ता स्वीकार करने पर।[10] इस काल में चारण लेखकों ने राजाओं की प्रशंसा से अपना थोड़ा ध्यान हटा कर जनचेतना पर भी लेखनी चलाई। इस काल के राजस्थानी साहित्य में चारण जाति के कवियों/लेखकों ने अपना योगदान विशिष्टता के साथ दिया।'वीरता का गान करने वाले कवियों में बाँकीदास का नाम उल्लेखनीय है इन्होनें सुपह छतीसी, भूरजाल भूषण, मान जसो मण्डल श्रीदरबार रा कवित, सिद्धराव छतीसी आदि प्रमुख हैं। इनके साथ ही अन्य कवि जिनमें महादान, आवडदान, मानजी, चंडीदान, रायसिंह, बुद्धसिंह, चिमनदास का नाम प्रमुख स्थान है।[11] शंकरदान सामौर ने भी अनेक वीर काव्यों की रचना की जिनमें प्रमुख हैं बखतरों बायरो, देश दर्पण, साकेत दर्पण, भागीरथी महिमा आदि। इन वीर रचनाओं में बुद्धसिंह ने गीतनरसिंहगढ़ महाराजा हनुवन्त सिंह रो, चिमनदास ने जसवंत पिंगल, लिछमण विलास, श्रीरामदे चरित्र, सूर्यमल्ल कृत बलवंत विलास, रामरंजाट, वंश भास्कर, शेरजी उज्वल कृत राजा बलवंत सिंह रे घोड़ो रो वर्णन, अमरदान ने जसवंत जस जलद, राठौड़ दुर्गादास री औरंगजेब ने अर्जी, आदि उल्लेखनीय काव्य आधुनिक चारण लेखकों का योगदान में गिने जाते हैं। राजस्थान के आधुनिक समय के प्रशंसात्मक काव्य लेखन में प्रशंसा के साथ-साथ राजस्थान के साहित्य में निन्दात्मक काव्य सृजन में चारण समाज के लेखक अपनी अभिन्न स्थान रखते हैं। जिसमें सूर्यकल्ल कृत वीर सतसई, बांकीदास कृत कृपण दर्पण, चंगुल मुख चपेटिका, वैसक वार्ता, कृष्णसिंह कृत कृष्णोपदेश, अमरदान कृत दारूरा दोष, अमल

रा ओगण, बिलाप बावनी, केसरी सिंह सौदा कृत शुभेच्छु चाबुक स्पर्श, आदि महत्वपूर्ण निन्दात्मक रचनाओं के माध्यम से चारण कवियों ने सच को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। इस काल में डिंगल की वीर काव्य धारा कुछ जर्जर हो गई थी, क्योंकि अब युद्ध कम हो गए थे। इस काल में चारण साहित्य में राष्ट्रीय काव्य की एक नई शाखा जुड़ गई थी। जिनमें प्रमुख रूप से गिरवरदान कृत आउवा रा गदर, सूर्यमल्ल कृत गीत आउवा रो, केसरी सिंह बारहट कृत चेतावनी रा चूंगटिया, रामलाल कृत देशमित्र, नाथूसिंह महियारिया कृत गांधी रातक आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। आधुनिक काल के राजस्थानी साहित्य के चारण साहित्य में कवि मुरारिदान कृत जसवंत जसो भूषण, डिंगलकोष, गणेशपुरी कृत मारूमहाराण, जीवनमूल, आदि रचनाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान हें चारण समाज के साहित्यकारों का वर्तमान में जो भी राजस्थानी के साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान जारी है। जिनमें विजयदान देथा कृत दाँता री फुलवाड़ी, माँरो बदलो, हिटलर, तीड़ोराव, दीवा कापे क्यू, सीतारामलालस कृत राजस्थानी व्याकरण, देवकरण बारहठ कृत, वीरमाला, गांधीशतक, देपालदे री वेल, बंगलादेश विजय, शुभकरण कविया कृत चारण काव्य उल्लेखनीय हैं, इनके साथ ही राजलक्ष्मी देवी साधना एवं इनके पति फतहसिंह मानव का भी चारण साहित्य को राजस्थान के साहित्य को राजस्थान के साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बनाने में योगदान दिया। आज भी चारण समाज से चन्द्रप्रकाश देवल, खेतदान चारण, अर्जुनदेव चारण आदि ऐसे महान चारण समाज के लेखक हैं जिनके द्वारा इस समाज की एक अलग पहचान बन गई है। राजस्थान के साहित्य में चारण लेखकों के योगदान को विजयदान देथा को मिलने वाला प्रथम राजस्थान रत्न पुरस्कार, अर्जुनदेव को प्राप्त बिहारी पुरस्कार ने चारण साहित्य के योगदान को प्रदर्शित किया है। इसी के साथ अनेकोनेक पुरस्कार प्राप्त चारण लेखकों की कलम ने राजस्थान के साहित्य में अपने समाज की एक विशिष्ट पहचान दिलाई। इसके साथ ही डिंगल भाषा को अपनी ऊँचाईयों तक पहुँचाने में अपना महत्वूपर्ण योगदान दिया। राजस्थान के साहित्य चाहे प्राचीन काल हो या मध्यकाल या आधुनिक काल में चारण समाज के लेखकों का नाम हमेशा अमर रहेगा ये राजस्थान के साहित्य का अभिन्न अंग रहंेंगे वर्तमान में भी चारण लेखक की कलम समस्याओं को उजागर करने में पीछे नहीं हैं। राजस्थान के साहित्य के साथ चारण लेखकों का नाम हमेशा जुड़ा रहेगा चारणों ने प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक राजस्थान के साहित्य में वीर काव्य, प्रशंसात्मक काव्य, निन्दात्मक काव्य, भक्ति काव्य तथा ऐतिहासिक काव्य की रचनाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने इस योगदान के कारण इनका नाम सदैव एक अभिन्न अंग के रूप में स्मरण रहेगा।

संदर्भसूचि

1 कृष्ण सिंह बारहठ, चारण कुल प्रकाश, 1932 पृष्ठ 15

2 Ibid, पृष्ठ 28

3 मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, भाग-1, 2010 पृ.28

4 फतहसिंह, भंवरसिंह सामोर, चारण बड़ी अमोलक चीज, 1989, पृष्ठ 52

5 मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, भाग-1, पृष्ठ 105

6 Ibid, पृष्ठ 126-127

7 फतहसिंह, भंवरसिंह सामोर, चारण बड़ी अमोलक चीज, 1989, पृष्ठ 66

8 मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, भाग-1, 2010, पृष्ठ 163

9 Ibid, पृष्ठ 297

10 गिरीजा शंकर शर्मा राजस्थान के सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास के स्त्रोत, (17-20वीं सदी) 2005, पृष्ठ 160

11 मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, भाग-2, 2010, पृष्ठ-48